हिन्दी व भोजपुरी गीतों का संकलन

संघर्ष की सात गीत

मधुसूदन विश्वकर्मा

लोक साहित्य परिषद

प्रथम प्रकाशन : सितम्बर, १९९१

मधुसूदन विश्वकर्मा की गीत-कविताओं का एक संकलन

सहायता राशि : २ रुपये

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद, द्वारा छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी. एम. एस. एस. आफिस, दल्लीराजहरा
दुर्ग (म.प्र)- ४९१-२२८

मुद्रक : बजाज प्रिन्टर्स, मेन रोड, दल्ली राजहरा

१ लाल हरा झंडा को देखो..... 1

२ २८ मार्च सन् १९९१ का हाल 2

३ चलबे करी ये साथी, चलबे करी ! 3

४ जागो मजदूर किसान..... 4

५ दीदो अनुसूईया, भाई सुदामा 5

६ गरीब मजदूरों को आखिर सताते हो क्यों ?... 6

७ शोषित मजदूर की आत्मा की आवाज 9

१

लाल हरा झंडा को देखो, इसमें कितना शान भरा;
इतिहास के पन्नों को देखो, इसमें कितना मान भरा ।
दल्ली की पहाड़ी को देखो, इसका मान बताती हैं;
उन अमर शहीदों की वेदी हम सबको याद दिलाती है ।
दल्ली के मजदूर खुशियों से इसे निर्माण किये,
छत्तीसगढ़ की मुक्ति के खातिर जन-जन में आवाज दिये ।
दल्ली के भाई सुदामा ने खून से इसको सींचा है,
एक होकर सभी लोग इस झंडा के नीचे हैं ।
माता अनुसूईया की बीरता आज भी हमें सिखलाती है,
संगठन के बारे में, हम सबको मार्ग दिखाती है ।
छत्तीसगढ़ के कोने कोने इस झंडा लहर-लहर लहराता है,
उन अमर शहीदों की बात हमें बार बार समझाता है ।

२

२८ मार्च सन् १९९१ का हाल

सुनिये सज्जन भाई, एक ऐसा हाल बताता हुं,
टेड़ेसरा में भोजवानी आये. उनका हाल सुनाता हुं ।
२८ मार्च मंत्रीजी आयेंगे, अखबारों से जब खबर मिला,
मजदूर-किसानों के दिलों में अरमानों का फूल खिला ।
भूमि-पूजन हेतु भोजवानी ज्यों ही गांव में आये,
इतने दिन तुम कहां रहे, गांव वाले सब आवाज दिये ।
जवाब न दिये मंत्रीजी ने, न तो कुछ भी वात किये,
लाइट बुझाया गाड़ी कें ओर कोपडीह की ओर भाग गये ।
शाम को साढ़े सात बजे, मंत्री फिर वापस आये,
गांव के जितने चमचे, सबको अपने पास बुलवा लिए ।
देकर पैसे चमचों को अपना धाक जमायें,
लाल हरा बालों को गांव से भगाओ, आवाज चमचे उठाये ।
गांव के जितने किसान हैं, वात उनको बर्दाश्त न हुयी,
पैसे खाये हो तुम चमचे, ऐसी सबने आवाज दी ।
इनकी मांगे जायज है, सही सही बतलाता हुं,
टेड़ेसरा में भोजवानी आये, उनका हाल बताता हुं ।

(२८ मार्च, १९९१ को मध्यप्रदेश के श्रम मंत्री लीलाराम भोजवानी टेंड़ेसरा में आने पर, उनको ग्राम वासियों का प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा । प्रस्तुत हैं उस दिन की घटना के बारे में एक कविता ।)

३

चलबे करी ये साथी, चलबे करी !
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?

खेत में किसानी करीं, बोई हम धनवां,
बाड़कल धूप में, चुवाइलां पसीनवां,
सोचीलां पेट अब भरबे करी !
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?
खेत खार बेंची, आपन लइका पढ़ाई;
घूस कें जमाना बाटे, पइसां कहां पाई !
कईसे के दुःख मोरा टरबे करी,
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?
कल कारखनवां में कमवां करावें,
आधा पेट भोजन पे, दिन भर खटावें ।
केकरा से दुःख हम कहबे करी !
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?
रोटीं के सवाल करी, पुलिस बोलावे,
भेजी केनी जेलीया में हमें तड़फावें !
केहु न दुःखवा मोरा सुनबे करी !
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?
मजदूर किसान मिली एकता बनाव,
सबके हो दुःखवा में, हथवा बटाव;
तब हो तअ सुख कें सूरज उगबे करी !
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?

४

जागो मजदूर किसान, देश के तुम ही हो महान,
लाल हरा पहिचान, सोचो सुन्दर समय ।
उपर शहीद की निशानी जाओ मजदूर पहिचानी;
ना तो होही बड़ हानि, सोचो सुन्दर समय ।
किसान नांगर खूब चलावें, धरती को हरिहर बनावें,
खेत में धान उपजावें, सोचो सुन्दर समय ।
किसान मजदूर दोनों भाई, दे दो शोषण भगाई,
अब घुसखोरी दो मिटाई, सोचो सुन्दर समय ।
पूंजीपतियन की शान, रखे पुलिस बलवान,
बनी गये है मसान, सोचो निर्दय समय ।
दे दो शासन पर ध्यान, सबको करे परेशान,
जाकर नाम है महान, सोचो सुन्दर समय ।
कैसा पुलिसों के ब्योहार, करें खूनी त्योहार,
खून बहाते हैं तोहार, सोचो निर्दय समय ।
समय ऐसा लाओ, क्रान्ति मिलि के लगाओ,
रातें चैन से बिताओ, सोचो सुन्दर समय ।

५

दीदी अनुसूईया, भाई सुदामा

दीदी अनुसूईया नयनवां की तारा बन गयी,
डुबते मजदूरों की नइया की सहारा बन गयी ।
छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा की पहली शहीद नारी हो,
पुलिस पापी दरद न जाने, दिहले गोली मारीं ही ।
सारी दुनिया से दीदी ने यारा बन गयी,
डुबते मजदूरों की नइया की सहारा बन गयी ।
दल्ली राजहरा के हीरा भी जन्नत में चली गइली हो,
गोली खाके अपने दीदी, रास्ता हमें बतवली हो ।
मजदूरों के आन्दोलन की सहारा बन गयी,
डुबते मजदूरों की नइया की सहारा बन गयी ।

भाई सुदामा छत्तीसगढ़ के रहे बालक वीर हो,
पुलिस पापी पाप कमइलें, लीहलें हीरा छीन हो ।
इनकी निशानी सड़क के किनारे बन गयी,
डुबते मजदूरों की नइया की सहारा बन गयी ।

शहीद साथी अमर रहे ।

(अनुसूईया बाई, सुदामा व और नौ श्रमिक साथी १९७७ के दल्ली राजहरा गोली कांड में शहीद हुए थे ।)

शेर : गरीब मजदूरों को आखिर सताते हो क्यों ?
उनकी मांगों को आखिर दबाते हो क्यों ?
जो तुम्हारे लिए खून पानी किये,
उन पर अन्याय कराते हो क्यों ?
नगर भिलाई के आन्दोलन का यह दस्तान रहा,
२५ जुलाई १९९१ रहा,
भूखे मजदूरों पर पुलिस की लाठी चली ।

गजल : भिलाई आन्दोलन की है यह कहानी,
जो लाल हरा के तले में हुआ ।
एक दरोगा की है यह कहानी,
जिसको पैसों का लालच हुआ ।

शेर : सुनो दोस्तों, एक बात मैं बताता हुं ।
भिलाई नगर का हाल मैं सुनाता हुं ।
रहा गद्दार मालिक कैलासपति केडिया था,
जैसे सब जानवर में एक भेडिया था ।

गजल : सुनकर आंखों में आता है पानी,
मजदूरों पर जो आपत पड़ी,
सन् इक्कानबे की है यह कहानी,
पूंजीपतियों से शासन बिका ।

शेर : जामुल थाना का टी.आई. वह सलाम रहा,
घुस खाने में भाई, इनका बड़ा नाम रहा ।
एक दिन सलाम को केडिया जी बुलवाये,
आन्दोलन तोड़ने का काम अपना फरमाये ।
कहे सलाम, मिस्टर केडिया सुन लीजिए,
काम होने से पहले पैसे तो कुछ दीजिए ।

गजल : अपनी वर्दी का मोल किये है, इनके चेहरे पर सुरियां हैं छाई,
देखो कैसा राज हो भाई, रिश्वत लेकर चले हैं सिपाही ।

शेर : तारीख पच्चीस जून मंगलवार रहा,
लाठी चलाने को पुलिस तैयार रही ।
मजदूर रैली लेकर जामुल जब आये,
मारमार कर पुलिस मजदूरों को गिराये ।

गजल : देश का कैसा कानून है भाई,
छिप जाता है सच्चाई ।

विदेशिया

धुन : मजदूर साथीया कें कबने गलतीया से
लाठी से मारी के गिरवलें रे पपीया !
लाठी चलवले पापी, दवा ना करवले पापी
बदवा में जेलीया पठवले रे पपीया ।

आल्हा : जबने श्रमिक वन के मजदूर नाम दिहले,
तेश नेता महान,
ओ ही रे मजदूर वन के कारण आम्बेडकर
सोची के बनवलें विशेष संविधान !
जबने मजदूर वन के उपकार के करनवा,
सरकारी कानून, बनल श्रम हो विभाग ।

ओ ही रे मजदूर वल कें ना कोई सुनवइया,
रो वलें आम्बेडकर ले के दुःख गहरा,
आज पैसा पे बिकाइल संविधान ।
लिखने मधुसूदन ले कें दुख गहरा,
आज पैसा पे बिकाइल संविधान ।

घुसखोरों को कैद करो, निर्दोषियों को रिहा करो ।

२५ जून ९१ सुबह जब मजदूरों का एक शांतिपूर्ण जुलूस जामुल थाना के सामने से गुजर रहा था, सुनियोजित ढ़ंग से पुलिस ने उन पर हमला किया। मजदूरों पर बेरहमी से लाठी चलायी गयी, मजदूर जब डटे रहे तो उन्हें तितर-बितर करने के लिए हवाई फायरिंग हुई। अनुपसिंह, भीमराव बागडे आदि कई श्रमिक नेता कों थाना में लाकर अधमरे होते तक पीटा गया। सौ से अधिक नारी व पुरुष श्रमिक गिरफ्तार हुए, झुठे मुकरणों में फ़ंसाकर उन्हें हफ्तों तक जेल में सड़ाया गया।

शोषित मजदूर की आत्मा की आवाज

शोषकों, अब सावधान ! शोषित वर्ग ललकारा है,
हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।

ठेकादारी प्रथा चलाकर मजदूरों का शोषण खूब किया,
पूंजी का घाटा दिखाकर सरकार को चकमा खूब दिया ।
ठेकादारी नहीं चलेगी जन-जन का यह नारा है.
हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।

रोटी की मांग को लेकर जब मजदूर आवाज लगाते हैं,
लाठी-गोली चलाकर वादे ठुकराये जाते हैं ।
लाल हरा झण्डा लेकर मजदूरों ने ललकारा है,
हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।

पैसे की करामात तो देखो, बिक गया श्रम विभाग हे,
राजमंत्री, नेताजी बिक गये, पुलिस हुई दलाल हे;
देखो इनको शरम न आती ! क्या दलितों के ये सहारा है ?।
हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।

इसी तरह अगर अन्याय बढ़ें तो; प्रतिरोध जरुर बन जायेगा;
शोषण-दमन-अत्याचार के खिलाफ हथियार मजदूर उठायेगा,
बारिश होगी खून की, कहना अरमान हमारा है;
हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।

लोक साहित्य परिषद के प्रकाशन

"मिल-जुल के सबो झन शोषण ला टार बो
छत्तीसगढ़ दाई के हावे रे गुहार....."
फागूराम यादव के चुने हुए गीत ५ रुपये

गीत-कविताओं का संकलन

संघर्ष की पुकार १ रुपया

संघर्ष की सात गीत २ रुपये

भारत के ट्रेड युनियन आन्दोलन की समस्याएं

छत्तीसगढ़ माइन्स संघ का एक लेख २ रुपये

अर्थशास्त्र का क-ख-ग ५ रुपये

इतिहास के पन्नों से

संथाल विद्रोह की अमर कहानी २ रुपये

मई दिन २ रुपये

२-३ जून शहीद दिवस शपथ दिवस २ रुपये

उत्तर प्रदेश का देवरिया जिला का बेलवा गांव में जन्मे मधुसूदन विश्वकर्मा की शिक्षा दसवीं तक की है। शुरु में मधुसूदन गांव का एक साइकिल दुकान में साइकिल सुधार का काम करते थे। तीन वर्ष पहले वे रोजगार की तलाश में छत्तीसगढ़ में आये, टेड़ेसरा का सिम्प्लेक्स इंजीनियरिंग फाऊन्ड्री वर्कस में उन्हे एक नोकरी मिली। काम वेल्डर के सहायक का, मासिक वेतन सिर्फ पांच सो चालीस रुपये।

१९९० के अन्त में भिलाई-टेड़ेसरा-उरला औद्योगिक क्षेत्र में मजदूर आन्दोलन की आंधी आयी। कारखाने-कारखाने में मजदूर स्थायी नोकरी, जीने लायक वेतन आदि जायज मांग उठाये, हाथ में छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का लाल हरा झंडा थाम लिये। टेड़ेसरा में भी प्रगतिशील इंजीनियरिंग श्रमिक सघ की शाखा बनी।

फिर शुरु हुआ दमन का दौर। युनियन बनाने के अपराध में हजारों मजदूरों को नोकरी से निकाला गया, मालिक के गुन्डे बार-बार मजदूरों पर हमला किये। पुलिस प्रशासन मालिकों के पक्ष लिए-हजारों मजदूरों को झुठे प्रकरणों में फंसाया गया, मजदूर नेताओं को जेल की काली कोठरियों में सड़ाया गया, आन्दोलनरत मजदूरों को बार बार निर्मम पुलिसी बर्बरता के सामना करना पड़ा। मजदूर लेकिन हटे नहीं, डंटे रहे।

ऐतिहासिक भिलाई आन्दोलन मजदूर वर्ग के अन्दर से कई कलाकार पैदा किया है। कामरेड मधुसूदन उनमें से एक हैं।